गुरु तो केवल ऐक "मति" हैं.....!

'मति' ही तो पूरा सतगुरु हैं - हे विद्वत दिव्य प्राणी.....!

बिना बुद्धि विवेक - विचार - व्यवहार के कमाया हुआ समस्त भंडार केवल घोर महानर्क का दुर्लभ समान मात्र ही हैं.....!

1. पवन अर्मभ सतिगुर मत वेला । सबद गुरू सुरत धुन चेला।

अर्थः- (उत्तरः अगली पक्ति का) प्राण ही अस्तित्व का मूल हैं । ये मनुष्य जनम का समय सतिगुरु की शिक्षा लेने का है । शब्द (मेरा) गुरु है, मेरी तवज्जो की धुनि का टिकाव (उस गुरु का) सिख है ।

कवण मूल कवण मत वेला । तेरा कवण गुरू जिस का तू चेला । कवण कथा ले रहहु निराले ।

अर्थः- (प्रश्नः) - (जीवन का) मूल क्या है ? कौन सी शिक्षा लेने का (इस मनुष्य जनम का) समय है ? तू किस गुरु का चेला है ?

बोलै नानक सुणहु तुम बाले । एस कथा का देइ बीचार । भवजल सबद लंघावणहार ।

अर्थः- नानक कहता है (जोगियों ने कहा-) हे बालक (नानक!) सुन, (हमें) इस बात की विचार बता (हमें ये बात समझा कि कैसे) शब्द से (गुरु जीव को) संसार समुंदर से पार लंघाने के समर्थ है ।

अकथ कथा ले रहउ निराला । नानक जुग-जुग गुर गोपाला ।

अर्थः- मैं अकथ प्रभु की बातें करके (भाव, गुण गा के) माया से निर्लिप रहता हूँ । और, हे नानक ! वह गुरु गोपाल हरेक जुग में मौजूद है ।

एक सबद जित कथा वीचारी । गुरमुख हउमै अगन निवारी ।

(942-943)

अर्थः- केवल गुरु-शब्द ही है जिससे प्रभु के गुण विचारे जा सकते हैं, (इस शब्द से ही) गुरमुख मनुष्य ने अहंकार (खुदगर्जी की) आग (अपने अंदर से) दूर की है ।

2. अंतर मैल जे तीरथ नावै - तिस बैकुंठ न जानां । लोक पतीणे कछू न होवै - नाही राम अयाना ।

अर्थः- अगर मन में विकारों की मैल (भी टिकी रहे, और) कोई मनुष्य तीर्थों पर नहाता फिरे, तो इस तरह उसने स्वर्ग में नहीं जा पहुँचना; (तीर्थों पर नहाने से लोग तो कहने लग पड़ेंगे कि ये भक्त है, पर) लोगों के पतीजने से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि परमात्मा (जो हरेक के दिल की जानता है) अंजान नहीं है ।

पूजहु राम - एक ही देवा । साचा नावण - गुर की सेवा ।

अर्थः- गुरु के बताए मार्ग पर चलना ही असल (तीर्थ) स्नान है । सो, एक परमात्मा देव का भजन करो ।

जल के मजन जे गत होवै - नित-नित मेंडुक नावह । जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर - फिर-फिर जोनी आवह ।

अर्थः- पानी में डुबकियां लगाने से अगर मुक्ति मिल सकती होती तो मेंडक सदा ही नहाते हैं । जैसे वह मेंढक हैं वैसे वे मनुष्य समझो; (पर, नाम के बिना वो) सदा जूनियों में पड़े रहते हैं ।

मनह कठोर मरै बानारस - नरक न बाचिआ जाई । हरि का संत मरै हाड़मबै - त सगली सैन तराई ।

अर्थः- अगर मनुष्य काशी में शरीर त्यागे, पर मन में कठोर हो, तो इस तरह उसका नर्क (में जाना) छूट नहीं सकता । (दूसरी तरफ) परमात्मा का भक्त मगहर की श्रापित धरती में भी अगर जा मरे, तो वह बल्कि और सारे लोगों को भी पार लंघा लेता है ।

दिनस न रैन बेद नही सासत्र - तहा बसै निरंकारा । कह कबीर नर तिसह धिआवहु - बावरिआ संसारा । (४४५)

अर्थः- कबीर कहता हैः- हे मनुष्यो ! हे कमले लोगो ! उस परमात्मा को ही स्मरण करो । वह वहाँ बसता है जहाँ दिन और रात नहीं, जहाँ वेद नहीं, जहाँ शास्त्र नहीं (भाव, वह प्रभु उस आत्मिक अवस्था में पहुँच के मिलता है, जो आत्मिक अवस्था किसी खास समय की मुहताज नहीं, किसी खास धर्म-पुस्तक की मुहताज नहीं) ।

3. अंधे गुगे अंध अंधार । पाथर ले पूजह मुगध गवार । ओह जा आप डुबे तुम कहा तरणहार । (५५६)

अर्थः- जो अंधे-गूगें बन कर किसी भी विशेष प्रकार की जड़ आराधना कर रहे, इन अंधे-गूंगों के लिए घुप-अंधेरा छाया हुआ है (भाव, ना ये सही रास्ता देख रहे हैं ना ही मुँह से प्रभु के गुण गाते हैं), ये मूर्ख गवार पत्थर ले के पूज रहे हैं । हे भाई ! जिस पत्थरों को पूजते हो जब वे खुद पानी में डूब जाते हैं, तो उनको पूज के तुम संसार-समुंदर से कैसे तैर सकते हो ?

4. करम धरम पाखंड जो दीसह - तिन जम जागाती लूटै । निरबाण कीरतन गावहु करते का - निमख सिमरत जित छूटै।

अर्थः- हे भाई ! (तीर्थ-स्नान आदि निहित) धार्मिक काम दिखावे के काम हैं, ये काम जितने भी लोग करते हुए दिखाई देते हैं, उन्हें मसूलिया जम लूट लेता है । (इस वास्ते) वासना-रहित हो के कर्तार की

महिमा किया करो, क्योंकि इसकी इनायत से छिन भर भी नाम स्मरण करने मात्र से मनुष्य विकारों से खलासी पा लेता है ।

संतह सागर पार उतरीऐ । जे को बचन कमावे संतन का - सो गुर परसादी तरीऐ ।

अर्थः- हे संत जनों ! महिमा की इनायत से संसार-समुंदर से पार लांघा जा सकता है । अगर कोई मनुष्य संत जनों के उपदेश को (जीवन में) कमा ले, वह मनुष्य गुरु की कृपा से पार लांघ जाता है ।

कोट तीरथ-मजन-इसनाना - इस कल मह मैल भरीजै ।
साधसंग जो हरि गुण गावै - सो निरमल कर लीजै ।

अर्थः- हे भाई ! करोड़ों तीर्थ-स्नान (करते हुए भी) जगत में (विकारों की) मैल लिबड़ जाती है । पर जो मनुष्य गुरु की संगति में (टिक के) परमात्मा की महिमा के गीत गाता रहता है, वह पवित्र जीवन वाला बन जाता है ।

बेद-कतेब-सिम्रित सभ सासत - इन्ह पड़िआ मुकत न होई ।
एक अखर जो गुरमुख जापै - तिस की निरमल सोई ।

अर्थः- हे भाई ! वेद-पुराण-स्मृतियाँ आदि ये सारे (हिन्दू धर्म पुस्तकें) (कुरान-अंजील आदि) ये सारे (पश्चिमी धर्म की पुस्तकें) आदि को सिर्फ पढ़ने मात्र से विकारों से निजात नहीं मिलती । पर जो मनुष्य गुरु की शरण पड़ कर अबिनाशी प्रभु का नाम जपता है, उसकी (लोक-परलोक में) पवित्र शोभा बन जाती है ।

खत्री ब्राहमण सूद वैस - उपदेस चहु वरना कउ साझा । गुरमुख नाम जपे उधरे सो कल महि - घट-घट नानक माझा । (747)

अर्थः- हे भाई ! (परमात्मा का नाम स्मरण करने का) उपदेश खत्री-ब्राहमण-वैश-शूद्र चारों वर्णों के लोगों के वास्ते एक जैसा ही है । (किसी भी वर्ण का हो) जो मनुष्य गुरु के बताए हुए रास्ते पर चल के प्रभु का नाम जपता है वह जगत में विकारों से बच निकलता है । हे नानक ! उस मनुष्य को परमात्मा हरेक शरीर में बसा हुआ दिखाई देता है ।

5. सतिगुर नो सभ को वेखदा - जेता जगत संसार । डिठै मुकत न होवई - जिचर सबद न करे वीचार । हउमै मैल न चुकई - नाम न लगै पिआर ।

अर्थः- जितना ये सारा संसार है (इसमें) हरेक जीव सतिगुरु के दर्शन करता है (पर) निरे दर्शन करने से मुक्ति नहीं मिलती, जब तक जीव सतिगुरु के शब्द में विचार नहीं करता, (क्योंकि विचार किए बिना) अहंकार-रूपी मन की मैल नहीं उतरती और नाम के प्रति प्यार उत्पन्न नहीं होता ।

इक आपे बखस मिलाइअन - दुबिधा तज विकार । नानक इक दरसन देख - मर मिले सतिगुर हेत पिआर ।

अर्थः- कई मनुष्यों को प्रभु ने खुद ही मेहर करके मिला लिया है जिन्होंने मेर-तेर और विकार छोड़े हैं । हे नानक ! कई मनुष्य सतिगुरु

के दर्शन करके सतिगुरु के प्यार में तवज्जो जोड़ के मर के (भाव, स्वैभाव का अहंकार गवा के) हरि में मिल गए हैं ।

सतिगुर न सेविओ - मूरख अंध गवार । दूजै भाइ बहुत दुख लागा - जलता करे पुकार । जिन कारण गुर विसारिआ - से न उपकरे अंती वार ।

अर्थः- अंधे मूर्ख गवार ने अपने सतिगुरु की सेवा नहीं की, माया के प्यार में जब बहुत दुखी हुआ तब जलता हुआ विरलाप करता है; और जिनके लिए सतिगुरु को विसारा था वे आखिरी वक्त पर (मुश्किल में) नहीं (उसका साथ देने पुकारने पर भी) नहीं आते ।

नानक गुरमती सुख पाइआ - बखसे बखसणहार । (594)

अर्थः- हे नानक ! गुरु की मति ले के ही सुख मिलता है और बख्शने वाला हरि बख्शता है ।

6. सची कारै सच मिलै - गुरमत पलै पाइ । सो नर जमै ना मरै - ना आवै ना जाइ । नानक दर परधान सो - दरगह पैधा जाइ । (19)

अर्थः- जो मनुष्य (स्मरण की) सदा टिके रहने वाले कर्म में लगा रहता है उसको सदा स्थिर प्रभु मिल जाता है, उसको गुरु की शिक्षा प्राप्त हो जाती है । वह मनुष्य बार बार मरता पैदा नहीं होता । वह जनम मरन के चक्रव्यूह से बच जाता है । हे नानक! वह मनुष्य प्रभु के दर पे आजाद होता है और वह प्रभु की हजूरी में सरोपा ले के जाता है और सदा के लिये परम चेतन सत्ता विशेष में लीन हो जाता हैं ।

साजन मीत सुजाण सखा - तूं सच मिले वडिआई । नानक नाम रतन परगासिआ - ऐसी गुरमत पाई । (437)

अर्थः- हे प्रभु ! तू ही मेरा सज्जन है तू ही मेरा मित्र है तू ही मेरे दिल की जानने वाला साथी है। तेरे सदा-स्थिर नाम में जुड़ने से (तेरे दर पे) आदर मिलता है। हे नानक ! (कहः) मुझे गुरु की ऐसी मति प्राप्त हुई है कि मेरे हृदय में परमात्मा का श्रेष्ठ नाम प्रगट हो गया है ।

7. नउ दर ठाके धावत रहाए । दसवै निज घर वासा पाए । ओथै अनहद सबद वजह दिन राती - गुरमती सबद सुणावणिआ । (124)

अर्थः- जिस मनुष्य ने अपने नौ दरवाजे (नौ गोलकें) (विकारों के प्रभाव की ओर से) बंद कर लिए हैं, जिस ने (विकारों की ओर) दौड़ता अपना मन काबू कर लिया है । उसने अपने चित्त आकाश के द्वारा (अपनी ऊँची हुई अक़्ल के द्वारा) अपने असल घर में (प्रभु चरणों में) निवास प्राप्त कर लिया है । उस अवस्था में पहुँचे मनुष्य के अंदर (हृदय में) सदा एक रस परमात्माकी महिमा के बोल अपना प्रभाव डाले रखते हैं। वह दिन रात अपने गुरु की मति पर चल के महिमा की वाणी को ही अपनी तवज्जो में टिकाए रखता है ।

बिन सबदै अंतर आनेरा । न वसत लहै न चूकै फेरा । सतिगुर हथ कुंजी होरत दर खुलै नाही - गुरु पूरै भाग मिलावणिआ ।

अर्थः- गुरु के शब्द के बिना मनुष्य के हृदय में माया के मोह का अंधकार बना रहता है । जिसके कारण उसे अपने अंदरनाम पदार्थ नहीं

मिलता और उसके जनम मरन का चक्कर बना रहता है । (मोह के बज्र किवाड़ खोलने की) कुँजी गुरु के हाथ में ही है । किसी और तरीके से वह दरवाजा नहीं खुलता। और, गुरु भी बहुत किस्मत से ही मिलता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

Guru is an important tool to gain ascendence as directed by shri guru granth sahib ji and it's 1430 pages are the true embodiment of guru's teachings (गुरमति). Naam/Shabd (रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष) is the true guru that guides the soul internally. A physical guru can dictate-scold-teach-guide etc but the internal guru is silent which creates a dilemma weather one's on right track or not. This can only be dispelled by wisdom and discretion (बुद्धि और विवेक). This makes them an important tool for soul's journey across this enormous sea of sorrows.

Wisdom is generated by contemplating the shlokas using ones brain and thoroughly thinking about their meaning and reasoning. Then this thought process must be translated to one's

behaviour and making adjustments to one's routine accordingly. Using your brain to generate wisdom and using your discretion accordingly to control your actions and implement them in your behaviour is what constitutes true representation of guru's teachings (गुरमति).

The above mentioned shlokas are perfect example of this. Worldly/Religious behaviour-rites-rituals-ceremonies etc-etc are perfect examples of herd mentality on a pathway to hell. All of this is conjured by the mind(मन) to waste the soul's precious time on earth, so that she stays in the circle of life and death and doesn't get engrossed in the divine. All this spectacle is just a farce generated to waste the soul's time and energy – and the poor soul just follows this blindly like a sheep without a brain, doing what has been done for generations with no effective net result. This is man mat(following instructions of the mind(मन) offering fake relief and sense on contentment). Following proper dress codes ascribed by religion or doing pompous pageantry in the name of religion is not following guru's teachings (गुरमति) or being a disciple. Being a

disciple entails that you should always be ready and eager to learn. Real learning never stops. When god himself is endless, how can you expect the teachings to be finite ? This attitude yields better outcome than sat guru and takes the soul forward in her path of divinity and only then this concludes in "जीवत मरिए भवजल तरिए". If the soul thinks that she has concluded her journey of learning and attains the role of a teacher then she reverts back to the endless cycle of rebirth and death. There is no better teacher than the naam/shabd/god(रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष) himself who is endlessly patiently waiting for the soul to start her journey – but the soul herself is engrossed in endless spectacle of worldly junk. Not realising that all this is just a dream – a speck in the thought of god and forgetting one's true path is a huge blunder that the soul cannot endure. Trying to teach is nothing but writing your own downfall, this precious and scarce life was earned by sacrificing so much and is being squandered upon wasteful desires.

The only true way out of man mat(desires of mind) is Yama (5 ethical social principles) and

Niyama (5 personal discipline principles). They are the most important tool in the arsenal of soul who deeply desires to leave this squalor and amalgamate with one true supreme power. The only way forward is to practically integrate Yama and Niyama in one's daily lifestyle and routine. Without them there is no pathway to success and whatever yoga-incantations-magical chakras opening-awakenings etc are ruses offered by the second player to the soul to keep illuminating this world. What you think is peace is actually the dilly dallying of the mind(मन). There is a continuous fight going on between two players for the stake of the soul on the tables of human avatar. One player is god, who always remains silent and only acts after the soul makes her choice and the second player is kaal/devil/demon(काल) etc who actively undermines the soul by offering various false pretences /offers /powers/solutions/peace etc. The only way to win is by inculcating Yama and Niyama in your life. Otherwise the lack of these principles is actively exploited by the second player. Without these fundamental concepts even god stays silent and you

have no power to be able to stand against the massive power of second player – who has the whole power of infinity and all of existence at his fingertips.

Only following the guru's teachings (गुरमति) and yearning to being a disciple forever and following the fundamental Yama and Niyama is the way forward for this soul on her journey to attain pure consciousness. Following various kinds of all pompous sanctimonious hypocrisy is nothing but the downfall of one's soul. The soul who journeys from the nine spheres by controlling herself from the influence of vices to the tenth main sphere, where the true consciousness resides is the only victor in life. The most important aspect is that this has to be done alive while being in human form, there is no other way that this can be attained. This is the true guru's teachings (गुरमति) as ascribed in the 1430 pages of Guru Granth Sahib Ji else is nothing but man mat(desires of mind).

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरु-सतगुरु-शब्द-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके अलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।
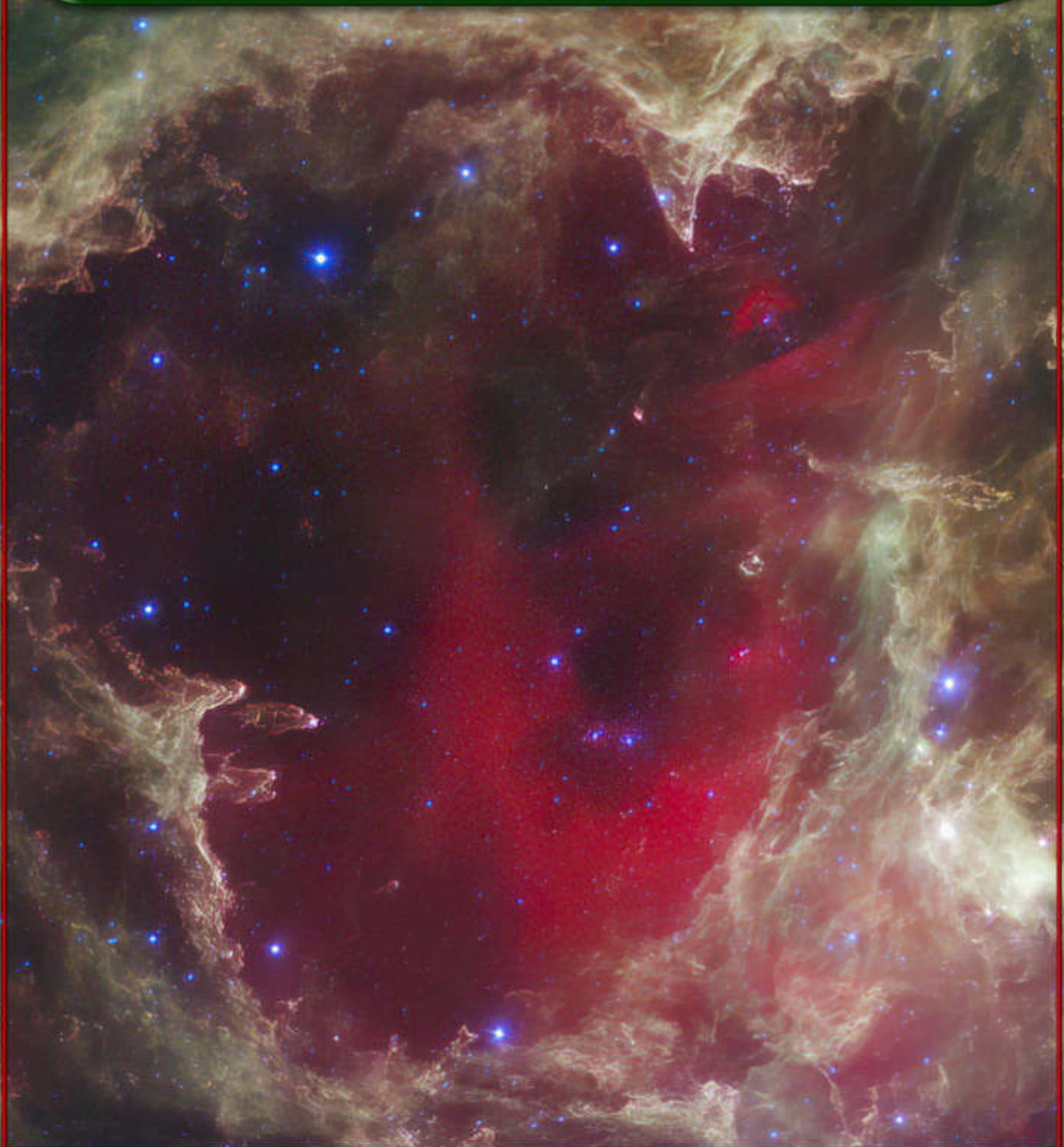
"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"